❁ गायत्री – मंत्र ❁

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

– भावार्थ –

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू । तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता तू ।।
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान। सृष्टि की वस्तु–वस्तु में, तू है विद्यमान् ।।
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया। ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला ।।

❁ नवकार महा–मंत्र ❁

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं ।।

– भावार्थ –

मैं अरिहंतो को नमन करता हूँ, मैं सिद्धों को नमन करता हूँ, मैं आचार्यों को नमन करता हूँ, मैं उपाध्याओं को नमन करता हूँ, मैं लोक (जगत्) के सर्व साधुओं को नमन करता हूँ। ये पाँच नमन के उच्चार, सभी पापों का पूरा नाश करते हैं। और, सभी मंगलों में यह बिलकुल प्रथम मंगल हैं

❁ मंगल–कामना ❁

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।
सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्व भद्राणि पश्चतु,
सर्वः सर्वमवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।।

– भावार्थ –

सुखी रहे सारी प्रजा, होवें सकल निरोग। नहीं किसी को दुःख मिले, सबके हित सब लोग।
बाधायें मार्ग में खड़ी, करें दुर्ग यह पार। पूरण हो मनोकामना, हो सर्वत्र विहार ।।

❁ प्रार्थना ❁

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम् देव–देव ।।